तुम कभी अल्मोड़ा आए हो?

भावना बामोरा
कक्षा पाँच, मैचून, अल्मोड़ा

16 *जनवरी* 2010, *शनिवार*

आज बहुत दिनों की छुट्टी के बाद स्कूल खुला। स्कूल जाना आज मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। जल्दी-जल्दी मन्दिर के पास वाली टंकी से पानी भरकर मैंने और उमा ने गुड़-रोटी खाई, दूध पिया और स्कूल के लिए तैयार हो गए। आज पीठ पर बस्ता टँगना भी अजीब लग रहा था। धीरे-धीरे मैं और उमा हाथ में पानी की खाली बोतल लिए स्कूल के लिए चल दिए। रास्ते में हमें पूजा, सूरज, हिमानी और लालू मिल गए। हम सबने टंकी वाले नल से अपनी-अपनी बोतलें भरी और देवी थान में होने वाले क्रिकेट मैच की बातें करने लगे। लालू ने बताया आज दो गाँवों की टीमों से हमारे गाँव की टीम का मुकाबला होगा। स्कूल पहुँचे तो देखा कि बहनजी पहुँच चुकी थीं। हमने सफाई की, पानी लाए। प्रार्थना की तैयारी हो रही थी कि मास्साब भी आ पहुँचे। हमने प्रार्थना की फिर मौखिक अभ्यास (पहाड़े, कविता और अँग्रेज़ी) किया। इसके बाद बहनजी एक-दो-तीन कक्षा वालों को लेकर पढ़ाने लगीं और मास्साब ने हमारी कक्षा लेनी शुरू की। आज पढ़ाई में किसी का मन नहीं लग रहा था। बच्चे भी कम ही आए थे। मेरा भाई आनन्द भी नहीं आया था। वह गाँव के बच्चों के साथ क्रिकेट देखने गया था। खेल-घण्टी के समय आज बहुत दिनों के बाद धूप में एकसाथ बैठकर दाल-चावल खाना अच्छा लग रहा था। हमने छिप्पम-छुप्पा भी खेला।

बाल सभा में आज नाच-गाने, कविता-कहानी, अन्ताक्षरी कुछ भी नहीं हुआ। बस सुलेख लिखने को दे दिया था। जो मुझे ज़रा भी अच्छा नहीं लगता। मास्साब-बहनजी दोनों हमारी पढ़ाई पर बहुत ज़ोर देते हैं। पाँच का बोर्ड जो है। इस बोर्ड ने तो आफत ही कर दी है। छुट्टी के बाद चार बजे तक मैं घर लौटी। कपड़े बदले, जंगल से गाय-बकरियाँ हाँककर लाई, पानी भरा और रोटी खाई। तब तक इजा-बाबू (माँ-पिताजी) भी घर लौट आए थे। रात को आलू के गुटके और रोटी बनी थी। सबने चाव से खाना खाया। नौ बज रहे थे। बाबू पड़ोस में जागर (एक पूजा) देखने गए और हम भाई-बहन इजा के साथ सो गए।

17 *जनवरी*

आज इतवार है। इजा सुबह-सुबह लकड़ी लेने जंगल चली गई है। आजकल जंगल खुला है कुछ दिनों के लिए। इजा जंगल से ठीठे (पाइन के खोल) भी लाएगी। हम उसे जलाकर स्यूते (पाइन के बीज) खाएँगे। मेरी बहन उमा और भाई आनन्द मेरे साथ हैं। मैंने चाय बनाई और बाबू ने सबको मडुवे (पहाड़ों में उगाया जाने वाला बाजरे की तरह का एक अनाज) की रोटी और गुड़ दिया। गुड़ के साथ बासी मडुवे की रोटी मुझे बहुत पसन्द है। आज उमा घर में पाटों (बकरी के बच्चों) की देखभाल करेगी। बाबू सड़क के काम पर जाएँगे और मैं गाय, बैल, बकरियों को चराने जंगल जाऊँगी। जब मैं 1.30 बजे बकरियों को लेकर घर पहुँची तो इजा ने गर्मागर्म भटिया जौला हरा धनिया-मिर्च के साथ बनाया था। मुझे तेज़ भूख लगी थी। ऐसे में गर्मागर्म खाना और ठण्डा पानी अमृत जैसा मीठा लग रहा था। मेरे घर पहुँचने पर उमा जंगल में गाय-बैलों के ग्वाले चली गई। इजा कपड़े धोने लगी। मैंने खाना खाकर बर्तन धोए। चूल्हा लीपा और भाई के सिर पर तेल डालकर बाल बनाए। फिर टंकी में जाकर मैंने सिर धोया, नहाया और कपड़े खँगालकर झाड़ी में सुखाने डाले। तब तक इजा ने गर्म चाय से भरा गिलास मेरे हाथों में थमा दिया। गुड़ के साथ चाय सुड़कने से मेरी सारी ठण्ड गायब हो गई। शाम को जब उमा गाय-बैल लेकर घर लौटी तो उसके हाथों में चार-पाँच ठीठों के गुच्छे थे। हमने रात को सगड़ (सिगड़ी) में आग जलाई, ठीठे जलाए और खूब स्यूते खाए। रात के खाने में आज मछली-भात बना

लूटाः पेड़ पर रखा चारा एक तो सूखता रहता है। दूसरे बारिश में सड़ता-गलता नहीं।

था। बाबू घर लौटते समय मछली खरीदकर लाए थे। मछली-भात खाकर मुझे बड़ी ज़ोर की नींद आ गई।

18 *जनवरी*

आज सोमवार है। मैंने सुबह उठकर आग जलाई और चाय का पानी चूल्हे पर रखकर शौच इत्यादि के लिए चली गई। मुँह-हाथ धोकर वापस आई तो इजा ने सबको गुड़ और चाय दी। चाय पीकर मैंने गाय-बैल-बकरी आँगन में बाँधे और पाटों को डाले (टोकरी) में धूप सिंकाने के लिए रखा। तब तक उमा और भाई जग चुके थे। मैंने भाई का हाथ-मुँह धुलाया और पानी लेने चली गई। फिर रोज़ की तरह पानी भरा, दूध-रोटी खाई और पौने दस बजे स्कूल के लिए रवाना हो गए। स्कूल हमारे घर से बहुत दूर नहीं है। घर से स्कूल तक सीमेंट की पगडंडी बनी है। रास्ते में बेडू का पेड़ है। गर्मियों में बेडू खाने में बड़ा मज़ा आता है। स्कूल के सामने एक ओर चीड़ का जंगल हैं और दूसरी ओर बाँज का। पहाड़ियों के बीच में हमारे गाँव का शिव मन्दिर है। स्कूल के नीचे पानी का गधेराई (छोटी-सी नदी) है। हम छुट्टी के दिन यहाँ मछलियों के बच्चे देखने जाते हैं। हम पाँच मिनट में दौड़कर स्कूल पहुँच गए।

स्कूल में वही सफाई, पानी भरना, प्रार्थना और पढ़ाई। संस्कृत, अँग्रेज़ी और गणित मुझे बिलकुल अच्छे नहीं लगते हैं। पता नहीं ये किसने बना दिए। मुझे तो सिर्फ कहानी पढ़ना अच्छा लगता है। आज मास्साब ने संस्कृत के रूप याद करने को दिए जो मुझे बिलकुल ही अच्छे नहीं लगते। आज मध्याह्न भोजन में खिचड़ी बनी थी। खिचड़ी मुझे बहुत पसन्द है। इसके बाद हम लोगों ने अन्ताक्षरी खेली। बहनजी ने हमें अँग्रेज़ी पढ़ाई। जानवरों के नाम याद करने को दिए और कॉपी में लिखने को भी कहा। Cat, Dog, Rat की स्पेलिंग तो जल्दी याद हो गई मगर Elephant जैसे बड़े शब्दों में मैं गड़बड़ा जाती हूँ।

छुट्टी के बाद मैं दौड़कर जंगल गई और गाय, बैल, बकरियों को हाँककर घर ले आई। फिर सगड़ में आग जलाई। सब्ज़ी काटी, आटा-गूँथा और इजा के खेत से लौटने का इन्तज़ार करने लगी। शाम ढले वो लौटीं। उन्होंने हाथ-पाँव धोए और चाय चढ़ा दी। चाय के उबलने तक वो मक्के का आटा गूँथने लगीं। तभी बाबू आए। सबने चाय पी। आग सेंकी। थोड़ी देर में इजा ने एक-एक मक्के की रोटी के साथ लाई (सरसों की तरह) का साग सबको परोसा। खाने के बाद किताब पढ़ते-पढ़ते कब नींद आ गई पता ही नहीं चला।

भटिया जौला बनाने का तरीका

काले सोयाबीन को थोड़ा मोटा-मोटा पीसकर लोहे की कढ़ाई में जम्बू (एक पहाड़ी बघार) से छौंक देते हैं। फिर पानी डालकर पकाया जाता है। जब वे अधपके हो जाते हैं, तब उसमें चावल धोकर डालते हैं। फिर चावलों को भी पकाया जाता है। खूब पक जाने पर इसका रंग काला-काला-सा हो जाता है। भटिया जौला को धनिए और हरी मिर्च या लहसुन के पत्तों और मिर्च, नमक के साथ खाने में बड़ा मज़ा आता है।

प्रस्तुतिः विनीता जोशी

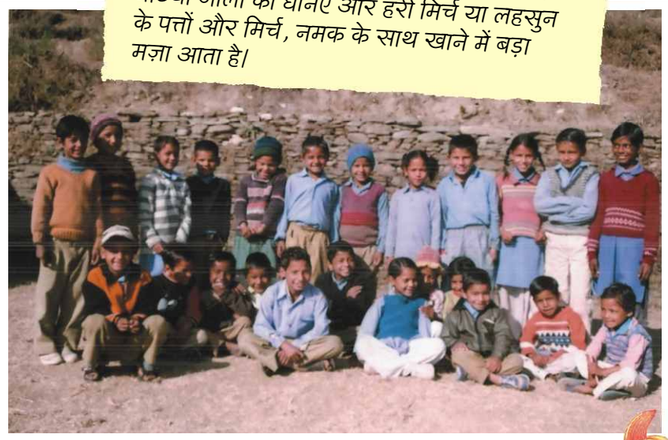

भावना अपने स्कूल के बच्चों के साथ - मैचून, अल्मोड़ा

सभी फोटोः विनीता जोशी